ॐ

"ॐ श्री गणेशाय नमः"

"धार्मिक व आध्यात्मिक विचार"

326। "एहिक ज्ञान " अपने आप में विशेष महत्व रखता है यदि भाव भक्ति सेवा व सच्चाई से युक्त होता है तो वह "एहिक ज्ञान" है स्वयं को तो मुक्त करता ही है पूरे विश्व को भी मुक्ति दिला सकता है। वह पारस मणि की तरह है जिसको छुएगा सोना हो जायेगा जैसे "गांधी जी" । और वही यदि छल कपट स्वार्थ व मूर्खता पूर्ण होगा स्वयं तो नष्ट होगा ही विश्व को भी विनाश के कगार पर खडा कर देगा जैसे " हिटलर"। विश्व का पूरा इतिहास इससे भरा पडा है।

327। ममता सात्विक नहीं होती, राजसी व तामसी होती है इसलिये इसको त्यागना तपस्या करना जैसा कठिन होता है यदि इस पर विजय पा ली जाये तो मुक्ति मिल सकती है और अपनायी जाये तो नरकगामी होती है ।

328। आजकल के समय में चलचित्रों में आध्यात्मिक नैतिक व सामाजिक मूल्यों का कोई अर्थ नहीं रह गया है।सच्चे प्रेम हृदय की चुभन , हृदय की आन्तरिक भावनाओं और गहराईयों को कोई स्थान नहीं सिर्फ पैसा चरित्रहीनता , नंगापन , हल्लागुल्ला और भौतिकवाद व दिखावे को प्रधानता दी जाती है जो क्षणिक है जब उन लोगों की आँखें खुलेंगी तब उनके लिये बहुत देर हो चुकी होगी पर अज्ञानता का भोग तो उन्हें भोगना ही पडेगा।

329। हिंसा मानवीयता का वो क्रूरतम रूप है जो प्रभु से हमेशा दूर रखता है पापों को बढावा देता है और विश्व में अशान्ति व दुख उत्पन्न करता है। अहिंसा मानवीयता का वो सौम्य रूप है जो प्रभु से मिलाता है और पापों का नाश कर विश्व में सुख और शान्ति स्थापित करता है ।

330। जनसाधारण सब यही सोचते हैं कि भगवान किसी विशेष स्थान पर होते हैं मन्दिर मस्जिद गिरिजाघर या तीर्थ स्थान में ,पर हमारी यह धारणा मिथ्या है ।ज्ञानी लोग यह जानते हैं कि भगवान सब मनुष्यों में प्राणियों में , आकाश वायु जल थल में व सर्वत्र व्याप्त हैं पृथ्वी व संपूर्ण ब्रह्मांड भी उनसे ओत प्रोत है ।

331। जिस प्रकार जलाशय व वर्षा निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा करते हैं उसी प्रकार सच्चे संतों का भी स्वभाव तन मन से सबकी सेवा करना होता है । वे सबके लिये निस्वार्थ भाव से सच्चे ज्ञान को , प्रभु को पाने के लिये प्रदर्शित करते हैं ।

332। व्यवस्था अपनी मुक्ति के लिये करो , जिस प्रभु ने तुमको मनुष्य जन्म दिया है इस पापी संसार से निजात पाने के लिये, संसार को वह स्वयं देखेगा जिसने इसका निर्माण किया है । यदि तुम संसार की व्यवस्था करने में लग जाओगे तो यहीं भटकते रहोगे **84** लाख योनियों तक और इस पापी संसार से छुटकारा नहीं मिलेगा ।

333। ज्ञानी स्वयं को देहात्म सुख और दुख से दूर रख कर प्रसन्न रहता है आपदा में भी प्रसन्न , प्रभु की ही लीला मान कर स्वयं को अकर्त्ता , उसको ही कर्त्ता मानता है । यही ज्ञान यज्ञ है ।

334। जो प्रत्येक क्षण अच्छे व सद् कार्य में बिताता है और समय का सदुपयोग कर हरि नाम में ही जीवन बिताता है उसकी मृत्यु भी शान्ति व सद्गति को प्राप्त करती है । मानव जीवन की अन्तिम परीक्षा मृत्यु ही है और उसी पर अगले जन्मों का निर्णय आधारित है ।

335। जो ज्ञान को अज्ञान समझ कर और अज्ञान को ज्ञान समझ कर संसार के पीछे भागता है वह जीवन बंधन से मुक्त नहीं हो पाता है , **84** लाख योनियों में भटकता है, सच्चा मार्ग नहीं पाता है ।

336। पैतृक धन व संपत्ति तो बिना किसी प्रयत्न के ही मिल जाती है परन्तु आध्यात्मिक संपत्ति अपने अच्छे कर्मों व प्रभु के शुभ आशीर्वाद से ही मिलती है । सच्ची सतत आराधना से प्रभु की कृपा अवश्य मिलती है ।

337। सच्चे ज्ञानी के आसपास का वातावरण भी उसकी शुद्ध भक्ति भावना का प्रतीक है जो आध्यात्मिक तरंगों से शुद्ध रहता है जो भी अधर्मी उस भव्य महापुरूष के सम्पर्क में आता है हृदय शुद्ध हो जाता है और वह प्रभु को पा लेता है ।

338। निन्दा करना, सुनना दोनों ही दोष हैं इससे हृदय व मस्तिष्क दोनों ही अपवित्र होते हैं ।मन को भगवान से दूर रखते हैं इसका त्याग करना चाहिये ।

339। "क्षमादान ईश्वरीय महत्व की वस्तु है ।अंत: करण की अभिव्यक्ति है " । मीठी वस्तु की मिठास केवल जिह्वा तक ही सीमित रहती है पर इसकी मिठास अंत:करण से संबंधित होती है जिसे भी दो उसका अंत:करण सराबोर कर देती है ।

340। "विद्या" सद्व्यवहार सदाचार व विनम्रता से ही सुशोभित होती है । बिना श्रद्धा के ईश्वर की आराधना का कोई महत्व नहीं है ।

341। अंत: करण की शुद्धि सुख शान्ति और परम गति प्राप्त करने के लिये मनमाना आचरण छोड कर शास्त्रों के अनुसार आचरण करना नितान्त आवश्यक है ।

342। आत्मानुभूति व सब धर्मो का आदर करना ही सच्चे धर्म का पालन करना है ,अंधानुकरण , अंधविश्वास , व्यर्थ का वाद विवाद , दूसरों के धर्म पर दोषारोपण करना धर्म का पालन नहीं है ।

343। विषयासक्ति , आकांक्षा , प्रतिष्ठा, मान , प्रमाद व दुराचार आदि विकार मनुष्य को भक्ति, सेवा, आराधना व परोपकार से दूर कर देते हैं जो प्रभु प्राप्ति में बाधक हैं।

344। आजकल के भौतिक युग में सदाचार व शिष्टाचार दोनों ही दुर्लभ हैं । " शिष्टाचार " सेवा , सौम्यता और परोपकार के विचारों से परिपूर्ण होता है, "सदाचार" व "सद्व्यवहार" जो कि मानवता के लक्षण हैं विश्व के सामाजिक व शांतिपूर्ण वातावरण के लिये अति आवश्यक हैं ।

345 | संपूर्ण ब्रह्माण्ड अपार ज्ञान का भंडार व स्त्रोत है । मनुष्य सैंकडों जन्म भी प्रयत्न करे फिर भी उसका पार नहीं पा सकता । भौतिक साधन उपलब्ध कर सकता है परन्तु संपूर्ण ब्रह्माण्ड , पृथ्वी व प्रकृति की रचना व देखभाल नहीं कर सकता , केवल परब्रह्म परमात्मा ही उसे करने में समर्थ है ।

346 | सद्पुरुषों के सत्संग से जीवन में करुणा , कृपा , दया , परोपकार व भक्तिभाव जैसे गुण हृदय में स्थापित होते हैं पवित्रता आती है , मनुष्य जीवन कृतार्थ होकर मुक्त हो जाता है ।

347 | कर्म के भोग और भोग के कर्म के इसी आनन्द में अज्ञानी का पूरा जीवन व्यतीत हो जाता है पर ज्ञानी इन सब वंधनों को त्याग कर आत्मा से निरंतर परब्रह्म परमात्मा को भजता है उसके मोक्ष पाने में संशय ही नहीं रहता है ।

348 | प्रभु की आराधना से अपना हृदय पवित्र रखो , सद्गुणों से संपन्न करो , लोभ , लालच , छल , कपट, घृणा व ईर्ष्या आदि से दूर रहो , हृदय में आत्मबल , पवित्रता आयेगी , हम जन कल्याण कर सकेंगे । स्वार्थी लोग पैसा कमाने के लिये ही सेवा का ढोंग करते हैं ।

349 | माया , असत्य व कपट से दूर रहने वाला परब्रह्म परमात्मा के धाम का अधिकारी होता है ।

350 | प्रकृति अपने आप में पूर्ण व्यवस्थित है और उसका प्रथम कानून व्यवस्था ही है ।

351 | सत्कर्म के लिये अन्तरात्मा सदैव स्वीकृति देती है पर दुष्कर्म के लिये नहीं ।

352 | आमदनी से अधिक खर्च कभी न करो , यदि धन का स्वामी कुबेर भी ऐसा करेगा तो वह भी एक दिन कंगाल हो जायेगा ।

353 | परिश्रम की कसौटी पर खरा उतरने वाला सदैव सुखी रहता है , उसे ईश्वर का आशीर्वाद हो तो सोने में सुहागा ही है इस जन्म में भी आगे के जन्म में भी सुखी रहता है ।

354 | " शान्ति " विश्व में व्यवस्था तथा उन्नति स्थापित करती है और युद्ध विश्व में अव्यवस्था तथा विनाश स्थापित करता है ।

355। सब प्राणियों में ईश्वर आत्मा रूप में रहता है सब में सुख दुख की अनुभूति होती है सब को समान मान कर चलो किसी से घृणा न करो सबसे प्रेम करो , ईश्वर की प्राप्ति होगी ।

356। साधक को संसार के मोहमाया से दूर रहने के लिये भगवान का ध्यान करना उसी प्रकार आवश्यक है जैसे गन्दे बर्तनों को साफ करना ।

357। सभ्य संसार के किसी भी देश प्रेमी देश की भाषा विदेशी नहीं हो सकती है उसकी अपनी ही भाषा होती है ।

358। एक नाविक अपनी जीविकोपार्जन का साधन नाव को नहीं छोड सकता है भक्त भी पापी भवसागर से पार जाने के लिये प्रिय प्रभु का दामन नहीं छोड सकता है ।

359। अज्ञानी होने से तो मनुष्य का जन्म न लेना ही अच्छा है , इस लोक व परलोक में जीवन निरर्थक है ।

360। भौतिक संसार में व परलोक में मनुष्य की इच्छा सुखी रहने की होती है । केवल भौतिकवाद के क्षणिक सुखों से ही नहीं , प्रभु की आराधना व उपासना का अमृत पान करने वाला दोनों ही लोकों में सच्चे सुख की प्राप्ति करता है ।

361। हर व्यक्ति के जीवन में कोई ध्येय रहता है और उसी के आधार पर उसका जीवन फलीभूत होता है और वह जीवन में संतुष्टि प्राप्त करता है ध्येय रहित जीवन बिना फूल पत्ते के पेड के समान निरर्थक होता है।

362। सच्चाई के मार्ग पर चलने वाला , कर्त्तव्यनिष्ठ , सच्चा साधक सब बंधनो को लांघकर , जन्म मरण के बंधन से मुक्त होकर परमात्मा को प्राप्त करता है ।

363। विचार व भावनायें ही कर्मों को जन्म देते हैं व प्रेरणा के स्त्रोत होते हैं इन पर नियंत्रण व संयम बहुत आवश्यक है अच्छे कर्मों को बढावा मिलेगा , बुरे कामों की प्रेरणा नहीं मिलेगी । संयमित व पवित्र प्रेरणा ही सर्वोच्च परिणाम पर ले जाती है ।

364। हिन्दी का सम्मान व श्रृंगार भारत के सभी भागों ने व राज्यों ने किया है हिन्दी ही राष्ट्रभाषा का विकल्प है।

365। निर्धन की सच्चे मन से की गई निस्वार्थ जन सेवा धनवान के नाम के लिये किये गये महादानों से श्रेष्ठ है।

366। कठोर वाणी का जितना घातक प्रभाव हृदय पर होता है उतना किसी शस्त्र का नहीं ।शस्त्र का घाव तो भर जाता है पर वाणी का घाव कभी नहीं भरता है । कठोर शब्दों के कारण महाभारत जैसे युद्ध हो चुके हैं विनम्र शब्दों का प्रयोग करो , विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है ।

367। मानव जीवन पानी के बुलबुले जैसे क्षणिक है फिर भी मनुष्य मायामय होकर आशाओं और आकांक्षाओं का किला तैय्यार कर लेता है जैसे उसे संसार में सदियों तक रहना है , यदि क्षणिक जीवन का विचार मन में आ जाये तो वह सब छोडकर प्रभु की आराधना करते हुये उस अखंड ज्योति को प्राप्त करने में लग जायेगा जो कभी नहीं बुझती है ।

368। स्वदेश प्रेम , स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग देश की उन्नति व स्वावलंबन की भावना जाग्रत करता है। गांधी जी ने देश के हित के लिये यही कदम उठाया था ।

369। अहिंसा धर्म की मर्यादा है , स्वदेश प्रेम व्यवहार की मर्यादा है ।

370। सेवा सहयोग प्रेम करुणा दान व क्षमा भारतीय संस्कृति के उच्च मानवीय तत्व हैं , जो सुदृढ व सुसंस्कृत समाज के निर्माण में सहायक हैं।

371। स्वाधीनता के पूर्ण रूप में अनुशासन और विनम्रता भी अपने पूर्ण रूप में निहित रहते हैं ।

372। माया के काले बादल सबको घेरे हैं सबको त्रस्त किये हुये हैं यही सब पापों की जड है केवल प्रभु की शरण व उसकी हृदय से आराधना कर के ही हम उसकी कृपा शक्ति व ज्ञान रूपी तलवार से माया को समूल नष्ट कर पापों से मुक्ति पा सकते हैं ।

373। खेल की भावना जीवन की सर्वोत्तम भावनाओं में से एक है , इसके साथ खिलवाड करना जीवन व देश के अनुशासन व देश भक्ति की भावनाओं के साथ खिलवाड करना है जो एक अक्षम्य अपराध है ।

374। अहंकारी और ज्ञानी व्यक्ति सत्य व भगवान को नहीं पा सकता , सरल व निश्छल व्यक्ति निरंतर प्रेम भाव से पा सकता है।

375। आजकल के चलचित्रों विज्ञापनों में अश्लील प्रवृत्ति के लोगों का प्रदर्शन बढ गया है, अश्लीलता आ जाने के कारण युवा वर्ग की , देश की संस्कृति का ध्यान उन्हें नहीं रहा , धनार्जन उनका मुख्य लक्ष्य है परन्तु युवा पीढी की मर्यादा सुरक्षित रखने वाले देश भक्तों के प्रति जो उनकी सुरक्षा में संलग्न है हम बहुत आभारी हैं ।

376। जीवन में दो रास्ते हैं भौतिकवाद व आध्यात्मवाद । भौतिकवाद में बहुत सारी सँकरी गलियाँ व दुख ही दुख है मानव सदियों तक भटकता रहता है । आध्यात्मवाद खुली चौडी सडक है सत्य पालन लोकसेवा हृदय से प्रभु का चिन्तन मुक्ति तक पहुँचा देता है ।

377। कण कण में सब जीवों में ईश्वर व्याप्त है उसी के इशारे पर सारा ब्रह्माण्ड चल रहा है पर अज्ञानता के कारण मायावी मनुष्य अपने को ही सर्वस्व मान बैठता है मृत्यु निकट आने पर चेतना आती है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है इसलिये शुरु से ही सच्चे ज्ञान की खोज में रहो अमर हो जाओगे ।

378। जिसके स्वभाव में सत्यता दया विनम्रता परोपकार सेवा भाव है उसमें अहंकार क्रोध झूठ ईर्ष्या व कपट आदि होता ही नहीं , ईश्वर प्राप्ति की कुञ्जी उसके पास है जब चाहे थोडे से प्रयत्न से सहज ही पा सकता है ।

379। दूसरों के सुखों से व्यक्ति ज्यादा दुखी होता है उतना अपने दुखों से नहीं होता ।

380। शाँत चित्त व्यक्ति में सद्गुणों का समावेश होता है और सब सुखों से पूर्ण होता है जबकि अशाँत चित्त व्यक्ति में दुर्गुणों का समावेश , दुखों से पूर्ण होता है।

381। " अज्ञान और अविवेक " का जन्मदाता अहंकार है इसके नष्ट होते ही दिव्यता का अनुभव होता है हृदय पवित्र होकर प्रभु की ओर अग्रसर होता है और आत्म ज्ञान होता है ।

382। ''चरित्र'' मानवता का द्योतक है समाज में आदर मान होता है अच्छे चरित्र वाला ईश्वर को भी प्रिय होता है , प्रतिष्ठा व यश तो छाया मात्र हैं ।

383। संयमी व सदाचारी होना एक अच्छे मानव के लिये सामाजिक विकास व उन्नति के लिये नितांत आवश्यक है दोनों ही आधार स्तम्भ हैं जिनके बिना उत्थान की कल्पना नहीं की जा सकती ।

384। व्यक्ति का चरित्र सफेद कोरे कागज की तरह है एक बार उसके ऊपर धब्बा लग जाये तो जीवन पर्यन्त उसे धोया नहीं जा सकता हृदय में काँटे की तरह चुभता रहता है ।

385। ध्येय निष्ठ मनुष्य हमेशा अपने ध्येय की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील रहता है असफल रहने पर भी उसकी पूर्ति के लिये प्रयत्न करता है एक दिन अवश्य ध्येय प्राप्त कर के ही रहता है । चुनौती नहीं स्वीकारता ।

386। सत्कर्मों से विवेक उत्पन्न होता है विवेकपूर्ण व्यक्ति सत्कर्मों का सहारा ले आत्मज्ञान प्राप्त कर प्रभु को पा लेता है अविवेकी स्वार्थ व दुष्कर्मों में ही संलग्न रहता है संसार में भटकता है दुर्ग ति पाता है ।

387। सुन्दर व मूल्यवान वस्त्रों का कोई महत्व नहीं होता व्यक्ति का मन सुन्दर व गुणों से पूर्ण होना चाहिये , कुरूप मन सोने के प्याले में विष की भाँति है ।

388। अच्छा व्यक्ति दूसरों में भी अच्छाईयों को देखता है क्योंकि अच्छाई व बुराई उसके स्वयं के प्रतिबिम्ब होते हैं ।

389। किसी की निन्दा , किसी से बैर न करना , सद्गुणों को धारण करना , सत्य बोलना , सबमें आत्मा को समभाव से देखना ,प्रभु शरण में नत मस्तक रहने वाला महापुरूष है सच्चा ब्रह्मज्ञानी है मुक्ति का अधिकारी है ।

390। ज्ञानी पुरूष पर उपकार व लोकहित के लिये हमेशा सेवा करते हैं अज्ञानी सदा स्वार्थी ,विपरीत होते हैं ।

391। भारत व विश्व में भ्रष्टाचार व आतंकवाद का साम्राज्य है शिक्षा व अच्छे चरित्र की अधिक आवश्यकता है तभी विश्व में सुख शाँति का साम्राज्य होगा ।

392। जन्म के समय शिशु के मुँह में सोने की चम्मच है या सादा चम्मच , महत्व केवल परम पिता परमात्मा के आशीर्वाद का है कि उसका जन्म अंतिम होगा,नहीं तो लाखों बार भविष्य में शिशु बनना होगा ,उद्धार न होगा ।

393। प्रभु ने इस धरा पर सब प्राणियों व मनुष्यों को जन्म दिया है जीने का अधिकार दिया है हमें किसी के जीवन व अस्तित्व से छेडछाड करने का , समाप्त करने का कोई नैसर्गिक अधिकार नहीं है । यह प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध है प्रभु की दृष्टि में हम दोषी होंगे अत: "जीओ और जीने दो" का सिद्धान्त ही उत्तम है।

394। संतोष व्यक्ति की अपार संपत्ति है ।

395। जिसने प्रेम भक्ति व आराधना द्वारा उसकी कृपा तथा आशीर्वाद से अपने हृदय मन व सब इन्द्रियों को वश में कर लिया है उसकी इस विजय को विश्व की कोई शक्ति चुनौती नहीं दे सकती है ।

396। प्रकृति की भी कैसी विडम्बना है । जानवरों में तो समझ नहीं होती प्रकृति ने ही उनका जीवन एक दूसरे पर निर्भर रखा है । परन्तु मानव जिसको प्रभु ने समझ दी है अच्छे बुरे का ज्ञान दिया है वह क्यों मांसाहारी बन कर जानवरों का भक्षण करता है वह तो इस हिंसा अपराध व पाप से बच सकता है जानते हुये भी पापों का भागी बनता है प्रभु उन्हें सद्बुद्धि दो ।

397। अच्छा चरित्र व्यक्ति की सबसे बडी पूँजी है ।

398। जिन महिलाओं व पुरूषों में दया व प्रेम का अपार समुद्र होता है उनके व्यव्हार में नम्रता व दयालुता होती है उनका चेहरा काँतिमय होता है इन विशिष्ट गुणों से पूरा वातावरण दया व प्रेम मय हो जाता है सम्पर्क में आनेवालों का भी अन्तरतम दिव्य ईश्वरीय अनुभूतियों से भर जाता है ।

399। मानव तन को सुन्दर बनाने सजाने के लिये अनेक प्रसाधनों , अमूल्य वस्त्रों को पाने में लाखों करोडों रूपये खर्च करता है जो कि नश्वर है मिट जाने वाला है पर मुक्ति के लिये कुछ नहीं करता । हरि भजन , सत्संग व प्रभु की आराधना से हृदय शूद्ध कर आत्मज्ञानी बन मुक्ति पा ले तो कितना अच्छा होगा ।

400। मानव जीवन ही मुक्ति का द्वार है ।

401। हमारा शरीर एक आवरण है इस शरीर से प्रभु की सेवा पूजा भजन ध्यान व आराधना करेंगे निश्चय ही अन्तरमन शुद्ध होगा आत्मज्ञान के वाद प्रभु कृपा से मुक्ति भी मिलेगी पापी संसार से छुटकारा भी मिलेगा ।

402। परम हितैषी से अन्तरंग बातें करने में जो आनन्द मिलता है ऐसे ही यदि हम प्रभु से अन्तरंग संबंध जोड कर बातें करें , भजन ध्यान कीर्त्तन के माध्यम से , निश्चय ही हम भी "मीरा" की भाँति उस परमानन्द को पा सकेंगे ।

403। एकता में अपार शक्ति है ।

404। कलिकाल में सच बोलना एक तपस्या है जो भगवान को प्राप्त करा कर मनुष्य को संसार से मुक्ति दिलाती है ।

405। हृदय में अच्छे गुणों का आना ईश्वर की कृपा का फल जानो , पवित्रता , आत्म ज्ञान व प्रभु कृपा निकट ही आई समझो ।

406। निस्वार्थ भाव से , तन मन धन से असहायों की सेवा करने वाला सच्चा साधु व सन्यासी है तीर्थाटन की उसे आवश्यकता ही नहीं , उसका तपस्यायुक्त जीवन उसका उद्धार कर देता है ।

407। भगवान को पाने के अनेक मार्ग धर्मो के रूप में हैं परन्तु उन्हें एक ही धर्म व मार्ग से जिसमें व्यक्ति की हार्दिक रुचि हो पाया जा सकता है सब मार्गो से नहीं ।

408। अविवेकी अपनी शक्ति धन व विद्या को सभी भौतिक सुख सुविधाओं को बटोरने व स्वार्थ में क्षय करता है , विवेकी पुरुष दूसरों की भलाई व सेवा में उसका उपयोग करता है पूर्ण हार्दिक व आत्मिक सुख पाता है।

409। निर्भयता आशा व आत्म विश्वास से जीवन में उन्नति के सारे रास्ते खुल जाते हैं । भय शंका व निराशा व्यक्ति की उन्नति के सभी रास्ते अवरुद्ध कर देती है ।

410। विद्वान प्रतिष्ठित व धर्मात्मा व्यक्ति को अपने छोटे से छोटे अवगुण दूर रखने चाहियें , नाव का एक छोटा सा छेद भी भरी नाव को डुबा सकता है । आज के समाज में कितने ही लोग ऐसे हैं जिन पर उँगली उठाई जा सकती है, चर्चा की जा सकती है ।

411। आनन्द व प्रसन्नता मानव को जन्मजात प्रकृति की दी हुई एक अभिव्यक्ति है उसकी आनन्द व प्रसन्नता पाने की इच्छा जब तक वह इस धरा पर है बनी रहेगी ।

412। विनम्रता से ईश्वरीय संपदा मिलती है , क्रूरता से संसारी विपत्ति मिलती है जो इसका अन्तर जानता है उसे सर्वदा परम शाँति मिलेगी ।

413। जिसे मान अपमान सुख दुख की अनुभूति नहीं होती वह परमानन्द को पाता है शारीरिक व दुनियाँ के सब बंधन त्याग कर अंत में ईश्वर को ही प्राप्त होता है ।

414। घर में अच्छे चित्र , धार्मिक देवी देवताओं के चित्रों का होना व्यक्ति की स्वंय की मानसिकता का प्रतिबिम्ब होता है उसकी भावनायें व हृदय पवित्र होता है। अश्लील व गंदे चित्र रखने वाला दुराचारी , कलुषित हृदय वाला होता है ।

415। व्यवसाय के रूप में धर्म का प्रचार व प्रसार करने वाले के भाषण से कभी सच्ची प्रेरणा नहीं मिल सकती है न ही श्रोताओं का उद्धार हो पाता है । स्वंय की कथनी करनी का पालन करने वाला , निष्काम कर्म करने वाला ही श्रोताओं के हृदय पटल पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है ।

416। मानव जीवन की सफलता केवल कामनाओं के त्याग में है अन्यथा उनके मायाजाल में **84** लाख योनियों तक वह यहीं भटकता रहेगा । कामना त्याग मुक्ति मार्ग की ओर अग्रसर करती है ।

417। गुरू परम्परा से सभी परिचित हैं पर अच्छे गुरू की नियुक्ति भी एक समस्या है जिस गुरू का जीवन आदर्श है जो शिष्यों को भी आदर्श जीवन निर्वाह का उपदेश देते हैं वही उत्तम गुरू हो सकता है । साँप छछूंदर की दशा में गुरू शिष्य किसी की भी मुक्ति नहीं होगी ।

418। सात्विक विचारों से परिपूर्ण व्यक्ति का हृदय विश्व या सांसारिकता को बंधन सा मानता है वह तो ईश्वर भक्ति से हार्दिक भक्ति से आत्म ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाना चाहता है ।

419। आत्म शक्ति व मन: शक्ति दोनों में बहुत अन्तर होता है । आत्म शक्ति शुद्ध व शक्तिशाली होती है भक्ति द्वारा परमात्मा से मिलाती है , परन्तु मन: शक्ति में अहं व माया का अंश होता है जो संसार में बाँधे रहता है मुक्ति में बाधक होता है ।

420। मन:शक्ति अहं व माया के विकारों से शुद्ध हो शक्ति प्राप्त कर आत्म शक्ति ही हो जाती है।

421। अच्छा इत्र अपनी सुगन्ध से वातावरण को सराबोर कर देता है , एक अच्छा संत भी अपने सौम्य व्यवहार से , शाँत व काँतिमय चेहरे से सबके मन को मोह लेता है । आध्यात्मिक वातावरण निर्मित हो जाता है ।

422। मन का स्थिर और दृढ होना उन्नति के मार्ग पर जाने के लिये अत्यावश्यक है ।

423। शुभ व सत्य कर्म में विलम्ब न करो तथा अशुभ व असत्य कार्य की कल्पना भी मत करो , यही ईश्वर को पाने की राह है ।

424। " मैं " कभी मरा नहीं इसलिये लाख चौरासी तक 'मैं मैं " करता रहा। 'मैं" जब मर जायेगा तो लाख चौरासी छोड प्रभु का धाम पायेगा ।

425। इसने उस परब्रह्म परमात्मा का भोले भाले बच्चों में ,कुमारियों में ,पौधों में ,फूलों में , कुत्ते के बच्चे में व चिडिया के बच्चे में साक्षात् दर्शन किया है जो कभी भी नहीं भूल सकता । आगे किस रूप में उसको दर्शन होंगे कुछ कह नहीं सकता ।

426। इन्द्रियों के सुखों के पीछे भागने वाला , वासनाओं के बोझ से दबा हुआ व्यक्ति इस जीवन में तो सदा दुखी रहता ही है आगे के जन्म के लिये भी दुखों की गठरी तैय्यार कर लेता है ।

427। शाँत सरल प्रेम से सराबोर व निष्कपट हृदय में माया का तो कोई स्थान ही नहीं है उसमें तो एकमात्र प्रभु का ही वास होता है ।

428। सत्य है कि मानव को संसार से मुक्ति पाने के लिये ईश्वर का ही सहारा लेना पडता है परन्तु यह भी सत्य है ईश्वर को संसार से पापों का नाश करने के लिये किसी चमत्कार या सत्प्रेरणा के लिये अवतार के रूप में मानव शरीर धारण करना पडता है अन्यथा वह भी कुछ करने में असमर्थ रहता है ।

429। सत्कर्मो से दुष्कर्मो का और दुष्कर्मो से सत्कर्मो का आभास होता है परन्तु विवेकी पुरुष सत्कर्मो को ही अपनाता है और अविवेकी पुरुष दुष्कर्मो को अपनाता है ।

430। मनुष्य का चेहरा एक अनोखा दर्पण है जिस पर दुख सुख हंसना रोना उल्लास अभिमान क्रोध ईर्ष्या द्वेष पीडा कपट प्रेम भावभक्ति दया माया व विरोध आदि सारे अच्छे बुरे भाव उस पर साफ झलक आते हैं । यदि चेहरा न होता तो किसी मनुष्य के भी भाव का कोई कुछ पता नहीं लगता ।यह अनोखा चमत्कार उसी के बस की बात है।

431। परम ब्रह्म परमात्मा ने जो शक्ति ज्ञान व सामर्थ्य दिया है उसी के बल पर मनुष्य सारे जीवन उछलता फिरता है स्वयं को श्रेय देता है और अभिमान से रहता है । वृद्धावस्था में उसकी शक्ति ज्ञान व सामर्थ्य सब कुछ समाप्त हो जाता है खिलौने जैसी अवस्था रहती है चाबी जब तक है चलता है फिर स्थिर हो जाता है।

432। नित्यप्रति पूजा करना व्रत रखना बडों को आदर देना आज्ञाकारी होना चरण स्पर्श करने आदि का लोप होते जाना अवनति का द्योतक है बुरे कामों के लोप होने से ही उन्नति हो सकेगी ।

433। प्रभु कृपा से थोडी सी भी सच्ची रागभक्ति का संचार हो जाये तो पूरा जीवन सफल हो जायेगा । वर्षो से बंद स्थान जहाँ अँधेरा छाया हो एक दीपक का प्रकाश क्षण भर में उजाला कर देता है ।

434।"माया"जीवन में अँधेरा कर नरक की ओर ले जाती है "दया"जीवन को प्रज्वलित कर मुक्ति दिलाती है।

435। मस्तक पर चंदन लगाना , गले में माला रूपी धर्म का प्रमाण पत्र लटकाकर घूमना ही धर्मात्मा बनना नहीं है जबतक राग भक्ति न होगी हृदय की पवित्रता न होगी मुक्ति नहीं मिल सकती भटकाव लगा ही रहेगा ।

436। माँ का लालन पालन व पाठशाला ही बच्चे के चरित्र की आधारशिला है शिक्षा अच्छी होगी तो चरित्र भी अच्छा ही होगा जीवन भी सफल व प्रकाशित होगा ।

437। प्रकृति के विपरीत सीमा के बाहर मानव का कोई भी कदम स्वयं मानव जाति के लिये घातक सिद्ध होगा।

438। चाँदनी रात का समय हो शान्त वातावरण हो व सितारों भरा नीला आकाश हो , उस समय एकाँत में प्रभु को मन से याद किया जाये अवश्य ही हृदय को ईश्वरीय अनुभूति होगी परम शान्ति मिलेगी ।

439। जुआ खेलना चोरी करना मद्यपान दुराचार व व्यभिचार आदि अनेक दुर्गुणों के कारण मनुष्य जीवन भर दुखी व अपमानित होता है , यदि यह सब छोड कर प्रभु के ध्यान में मन लगाये समय का भी सदुपयोग होगा व तिरस्कार से छुटकारा पायेगा व उसे परम शान्ति मिलेगी ।

440। पूरे ब्रह्माण्ड व दुनियां के जीवन व हलचल का कारण व रहस्य वही परब्रह्म परमात्मा ही है उसके न रहने पर सब समाप्त हो जायेगा प्रलय हो जायेगी ।

441। प्रत्येक प्राणी व वस्तु उत्पत्ति के पहले भी नहीं थे उसके बाद भी नहीं रहेंगे तो समाप्ति के लिये क्या शोक करना , समय काल किसी की प्रतीक्षा नहीं करता । विवेकी पुरुष कभी विचलित नहीं होते न ही वे कभी मोहमाया से सुखी दुखी होते हैं ।

442। बुढापे में प्रसाधनों का प्रयोग करना लज्जाजनक है बालों का रंगना विग लगाना व्यर्थ ही है कुछ ही समय में शरीर मिट्टी में ही मिलने वाला है उसके लिये क्या करना । "बकरे की माँ कब तक सिन्नी बांटेगी "।

443। स्वयं का अंत:करण ही सुख और शान्ति का केन्द्र है ।

444। प्रभु का भजन कीर्त्तन करते करते हृदय पवित्र हो जाता है प्रभु का पवित्र औरा व आभा उसके हृदय में समा जाता है वह व्यक्ति ब्रह्म ज्ञानी हो जाता है ।

445। ब्रह्म ज्ञानी की पवित्र आध्यात्मिक हार्दिक तरंगों से उसके आसपास का वातावरण भी पवित्र हो जाता है जो भी उनके सम्पर्क में आता है उसके विकार व दुर्गुण दूर होकर उसमें भी पवित्रता आ जाती है ।

446। भगवान दया व करुणा के सागर हैं सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना को सुनते ही गद्‌गद्‌ हो जाते हैं भक्त को हृदय से लगा कर उसका उद्धार कर देते हैं । भक्त भी बंधनमुक्त हो परमानन्द को पा लेता है ।

447। रे मन इस काया को सजाने सँवारने में इतना समय व शक्ति न लगा कुछ ही समय में यह कुरुप बनकर मिट्‌टी में मिलने वाली है । प्रभु की आराधना मन से व रागभक्ति से कर जिससे यह जन्म व आगे का जन्म भी सुधर जाये , पापी संसार से छुटकारा भी मिल जाये ।

448। आध्यात्मिकता परम शान्ति व मुक्ति का द्वार है व भौतिकता अशान्त व नरक का द्वार है।

449। धर्म व अधर्म आचरण में निहित रहता है ।

450। ज्ञान और वैराग्य हुये बिना भक्ति नहीं होती ।

451। सत्संग की सार्थकता तभी है जब हमारा आचरण शुद्ध हो व सद्‌गुणों का संचार हो अन्यथा बिना मन के सत्संग करना समय को नष्ट करना है ।

452। किसी को सुखी व दुखी देखकर मन को निश्चल रखो । प्रभु की ही लीला है , सुख को छोडो , दुख को दूर कर सकते हो तो सहायता करो , निर्लिप्त मत हो , प्रभु की आराधना करो , शान्ति मिलेगी ।

453। कर्मो का फल तो भोगना ही पडता है उसे कोई नहीं टाल सकता ।भगवान श्री कृष्ण पांडवों के साथ थे और अर्जुन के सारथी थे फिर भी पाण्डवों को कितने कष्ट उठाने पडे ।भगवान श्रीराम और सीता जी को भी जीवन में कितने कष्ट उठाने पडे थे।यह प्रकृति का नियम है जो हमने किया है उसका फल तो भोगना ही पडेगा।

454। हम कर्म करने के लिये स्वतंत्र हैं पर फल हमारे हाथ में नहीं है अत: हमें सत्कर्म ही करने चाहियें ताकि हमारा कल्याण हो ।

455। सद्‌गुणों को ग्रहण करो बुराइयों , विकारों को अपने से दूर रखो हरि सुमिरन करो , मुक्ति मिलेगी ।

456। वाणी का उपयोग अनुचित बातों के लिये न करो , बुद्धि और विद्या का उपयोग वाद विवाद के लिये न करो , व्यक्तित्व का उपयोग मानव प्रतिष्ठा के लिये न करो , अपने गुणों का उपयोग स्वार्थ के लिये न करो , प्रभु की कृपा के पात्र न बन पाओगे ।

457। अपनी अच्छाइयों व गुणों को ईश्वर की देन समझ कर निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा व सबकी भलाई के लिये ही उपयोग करो , अहं का भाव न जागे , निरंतर प्रभु की पूजा आराधना में समर्पित रहने वाला ही सच्चा परम भक्त है ।

458। विश्व में सारे जानवर जन्म मरण के बंधन से लाचार हैं क्यों कि उन्हें बुद्धि कम मिली है पर मानव को बुद्धि तो मिली है मोहमाया वश उसका सदुपयोग नहीं करता , इसलिये लाचार है ।

459। सांसारिक दुख दर्दो से आहत व्यक्ति अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं यदि उसे अपने ही कर्मों के फल जान कर प्रभु को अर्पण कर दें , उन्हीं में ध्यान लगायें , मन का क्लेश दूर होगा , परम शान्ति मिलेगी ।

460। आज के युग में जबतक आपके पास किसी विशिष्ट विषय का प्रमाणपत्र न हो आपको नौकरी नहीं मिलेगी चाहे आपको सब विषयों का पूरा पूरा ज्ञान हो । आप कितने भी विद्वान व प्रभावशाली हों , यदि प्रभु आराधना व रागभक्ति से हृदय पवित्र नहीं हुआ है आत्मज्ञान नहीं हुआ है आप जन्म मरण के बंधन से मुक्त नहीं हो सकते, न ही भगवान को पा सकते हैं ।

461। आध्यात्मिकता मनुष्य व समाज के हर क्षेत्र में उसकी नैतिक सफलता व शान्ति के लिये नितान्त आवश्यक है भौतिकवाद ने ही अनैतिकता , आतंकवाद व भ्रष्टाचार आदि घातक विकारों को फैला रखा है।

462। ईश्वर की कृपा से ही मनुष्य सत्संग कथा व कीर्त्तन की ओर आकर्षित होता है आध्यात्मिकता की ओर बढता है उसका मन निर्मल हो जाता है ।

463। भाग्य अपने ही अच्छे व बुरे कर्मों का फल होता है परन्तु हम अज्ञानता के कारण अपने को सराहते हैं और भगवान को दोष देते हैं , हमारी कितनी बडी भूल है ।

464। दुख दर्द और दरिद्रता हृदय को पवित्र कर सच्चा मानव बनाते हैं व सुख और संपत्ति हृदय को अपवित्र कर कठोर व दानव बनाते हैं ।

465। शुद्ध भावनाओं से निरंतर सफलता के लिये प्रयत्न करने वाला व्यक्ति कभी असफल नहीं होता ।

466। जीवन एक संघर्ष पूर्ण कर्म क्षेत्र है , अपने पुरुषार्थ से लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरंतर प्रयत्नशील रहने वाला जीवन में बहुत आगे निकल जाता है इसके विपरीत अकर्मण्य व्यक्ति कर्म क्षेत्र में बहुत पिछड जाता है।

467। समुद्र में व जंगल में सीधे साधे अहिंसक जानवरों की बडी ही दयनीय स्थिति होती है उनका जीवन किस क्षण किसका भक्षण बन जायेगा उन्हें नहीं मालूम रहता ।यदि हिंसक जानवरों का भोजन अहिंसक जानवर न होकर घास पेड पौधे आदि ही होता , उनके प्रति ईश्वर की कितनी बडी कृपा होती, निर्भय विचरण करते ।

468। आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनों ही भगवान की देन हैं , मानव बुद्धिमान होते हुये भी भौतिकवाद को ही प्रधानता देता है , अधोगति का ज्ञान होते हुये भी , मुक्ति की ओर जाने की नहीं सोचता ।

469। मनुष्य के अंत:करण में ईश्वर का वास होता है , ईश्वरीय पुकार ही नहीं सुनता , फिर भी अज्ञानता वश मनमाना आचरण करता है , इसी से वह दुखी रहता है ।

470। आज राजनीति भी अध्यात्म रहित है, अधर्मी व भ्रष्ट लोग ही राजनीति में आते हैं अपनी ही सत्ता चाहते हैं जिससे देश व जनता पर शोषण बढ जाता है । देश व जनता की सेवा व भलाई के लिये अच्छी व सच्ची भूमिका निभाने वाले सज्जन राजनीति में कम ही दीख पडते हैं ।

471। विवेक व वैराग्ययुक्त विद्वता पवित्र व लोक परलोक सुधारने वाली होती है जबकि वैराग्यहीन विद्वता आधारहीन अपवित्र व स्वार्थी होती है।

472। जीवन के उच्च्य मूल्यों आदर्शों तथा सिद्धान्तों का आंकलन विषम परिस्थितियों में ही होता है तभी उसकी सार्थकता सिद्ध होती है ।

473। मानव मस्तिष्क विश्व को ईश्वर की एक ऐसी अद्भुत भेंट है जिसका सृष्टि में कोई दूसरा विकल्प नहीं है

474। जब सत्य व असत्य आपस में टकराते हैं सत्य की ही विजय होती है उसके पीछे ईश्वर का ही आत्मिक बल व समर्थन होता है ।

475। संतोष व सज्जनता सबसे बडी सम्पत्ति है और असंतोष व असज्जनता सबसे बडी दरिद्रता है ।

476। सृष्टि का प्रवाह स्थापित रखने के लिये ईश्वर ने मनुष्य व प्राणियों को एक विकल्प के रूप में रखा है पर उनकी मृत्यु व उद्धार का निर्णय अपने हाथ में सुरक्षित रखा है ।

477। विरक्तता विवेक व किसी वस्तु में आसक्ति का न होना ही व्यक्ति को ईश्वर की कृपा का पात्र बनाता है वही ईश्वर का सच्चा भक्त होता है।

478। निर्लिप्तता हृदय को शुद्ध कर आत्मज्ञान द्वारा प्रभु से मिलाती है , आसक्ति हृदय में अशान्ति उत्पन्न कर अपवित्र करती है संसार में लिप्त रखती है ।

479। बुद्धिमत्ता का क्षेत्र स्वतंत्रता है परतंत्रता व बंधन नहीं है।

480। किसी भी प्रभावशाली प्रतिष्ठावान का हृदय व मानसिकता यदि अपराधी और दोषपूर्ण है तो वह अपने स्वार्थ व आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये किसी भी प्रकार का अनिष्ट कार्य कर सकता है जो देश व जनता के लिये घातक सिद्ध होगा , उस पर विश्वास करना एक बडी भूल होगी।

481। अच्च्छा आचरण अच्छे चरित्र का द्योतक है वह समाजप्रिय व प्रभुप्रेमी होता है , संसार से तर जाता है।

482। भौतिक आविष्कार भौतिकता पर आधारित होने के कारण क्षणिक दुखदायी अशान्ति देने वाले व अनिष्टकारी होते हैं संसार से छुटकारा नहीं मिलता । आध्यात्मिक आविष्कार आध्यात्मिकता पर आधारित होने के कारण चिरस्थायी फलदायक शान्तिप्रदान करने वाले परम गति दिलाने वाले होते हैं ।

483। रे मन काया का क्या अभिमान करना , आज स्वस्थ सुन्दर है कल उम्र के साथ कुरुप होकर नष्ट होकर मिट्टी में मिल जाने वाली है इसके अन्दर जो हृदय है उसको अच्छे विचार व गुणों से सजाओ तथा प्रभु की रागभक्ति व आराधना द्वारा पवित्र करो ताकि काया के नष्ट होने पर प्रभु को हमेशा के लिये पा सकें ,जीवन कृतार्थ कर सकें ।

484। सत्कर्म शान्ति व दैवी प्रवृत्ति के होते हैं दुष्कर्म अशान्त व राक्षसी प्रवृत्ति के होते हैं दोनों एक साथ कभी नहीं रह सकते ।

485। अत्याचार सहन करना व उसको बढावा देना पाप व अकल्याणकारी होता है करने वाला तो पाप करता ही है सहने वाला भी पाप का भागी होता है, उसका विरोध कर समाप्त कर देना चाहिये ।

486। शिक्षा संस्थान शिक्षक के चरित्र निर्माण करने व अच्छे जीवन को ढालने वाली कार्यशाला होती है ।

487। गेरुआ वस्त्र थारण कर धर्म के नाम पर स्वार्थ पूर्ति के लिये दूसरों से पैसा एकत्र करना , दंभ व अहंकार से युक्त , स्वयं को ब्रह्मज्ञानी कहने वाला , धोखा देने वाला अत्याचारी व पाखंडी है उससे सदा सावधान रहना चाहिये, कभी भी प्रभु की कृपा का पात्र नहीं बन सकता ।

488। प्रसन्नता स्वास्थ्य की कुञ्जी है और उदासी रोगों का भंडार ।

489। छोटे से छोटा जन्तु जिसमें जीवन की पूर्ण प्रतिकिया है परम पिता परमात्मा का ही रूप है अत: उसे अन्य प्राणियों की भाँति ही पूरी सुरक्षा व आदर प्रदान करना चाहिये ।

490। जीवन का मूल्य उसके गुणों से आंका जाता है उसके अवगुणों से नहीं ।

491। अपनी सुख सुविधा के लिये किसी से जहाँ तक हो सके अपने कार्य व सेवा न करायें , उसको उसकी सुख सुविधाओं से वंचित न करें , उसके ऋणी न बनें , परन्तु स्वेच्छा से सेवाभाव दर्शाना पवित्र कार्य है परमार्थ प्रदान करने वाला है ।

492। श्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो अवसरों को अपने आधीन करते हैं वे कभी अवसर की प्रतीक्षा नहीं करते ।

493। भौतिक संतुलन कभी भी सीमा में नहीं रहता है दुखदायी व अनिष्टकारी होता है आध्यात्मिक संतुलन प्रभु के हाथ में होने के कारण सुख परम शान्ति देने वाला व कल्याणकारी होता है ।

494। माँसाहारी हिंसक प्रवृत्ति के होने के कारण अहिंसक जीवों के दुख की कल्पना नहीं कर सकते परन्तु आगे के जन्म में इस दुष्कर्म की सजा उन्हें अवश्य ही मिलेगी यह प्रकृति का नियम है ।

495। अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्ति की आभा हाव भाव चाल ढाल व व्यवहार सभी अपराध पूर्ण ही होते हैं समाज में उसे तिरस्कार व अपमान ही मिलता है यदि वह निरंतर सत्संग भजन ध्यान करे हृदय को सब दोषों से पवित्र कर ले तो आदरणीय स्थान पा सकता है ।

496। ये काया उम्र के साथ कुरुप होती जा रही है उसका दुख नहीं एक दिन तो मिट्टी में मिलनी ही है हे प्रभु मुझे इस संसार की मोहमाया से दूर रखो हृदय को विकारों से पवित्र कर अपना बना लो यही आपसे करबद्ध मेरी प्रार्थना है , मुझे आगे के जन्मों में भटकना न पडे ।

497। जब मन अस्थिर हो संसार के सब विकारों के तूफान से डाँवाडोल हो रहा हो अपने मन को प्रभु के हवाले कर दो जोर जोर से कीर्त्तन भजन करो हृदय से प्रभु को याद करो , सब विकारों को दूर करके तूफानों से लडने की शक्ति तुम्हें मिल जायेगी रक्षक का हाथ उठ जायेगा परम शान्ति मिल जायेगी ।

498। संसारी व्यक्ति गृहस्थी के मोहमाया में उलझा हुआ है उसकी दृष्टि पक्के बंद कमरे की तरह सीमित रहती है पर ब्रह्मज्ञानी पुरुष संसार के सब विकारों से परे रहता है मानो काँच के कमरे में , अन्दर बाहर सब कुछ देख सकता है उसे पूरे विश्व का ज्ञान रहता है ।

499। प्रभु के परम भक्त का मन अनैतिक कृत्यों में नहीं लगता है वह अश्लील नृत्यों , जुआ घरों , मांसाहारी पार्टियों में नहीं जाना चाहता , उसे तो प्रभु की भक्ति का रस पान ही अच्छा लगता है , चातक पक्षी की भांति स्वाति नक्षत्र का ही जल पीता है भले ही विश्व में जल के अगणित भंडार भरे रहते हैं ।

500। हम सबके व परम पिता परमेश्वर के भी पहले अनेक जन्म हो चुके हैं , संसारी मोहमाया व नाना प्रकार के विकारों से युक्त हमारा मन व हृदय कमजोर है अच्छे कर्मों से पवित्र न होने के कारण तथा आत्मिक शक्ति न होने के कारण हम अपने पिछले जन्मों को नहीं जानते हैं परन्तु परम पिता परमात्मा सब विकारों से रहित व आत्म शक्ति से सम्पन्न होने के कारण ही अपने व हमारे पिछले जन्मों के बारे में सब जानते हैं ।

अन्कण ऊषा अग्रवाल द्वारा